eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 03, March 2024

मानवेंद्र नाथ रॉय का नव–मानववाद, एकात्म मानववाद और अंत्योदय की अवधारणा

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 March 2024, Accepted & Reviewed: 25 March 2024, Published: 31 March 2024

Abstract

यह शोध पत्र भारतीय विचारक मानवेंद्र नाथ रॉय के नव–मानववाद, दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद तथा महात्मा गांधी की अंत्योदय अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। नव–मानववाद की मूलभूत धारणाएँ, जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता, तार्किकता, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश होता है, को समझने के साथ–साथ, भारतीय समाज और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में एकात्म मानववाद और अंत्योदय की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया गया है। शोध पत्र में तीनों विचारधाराओं के पारस्परिक संबंधों और समकालीन सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में उनकी भूमिका का गहन विश्लेषण किया गया है।

कीवर्ड– मानवेंद्र नाथ रॉय, नव–मानववाद, एकात्म मानववाद, अंत्योदय, समाजशास्त्र, भारतीय दार्शनिक परंपरा, सामाजिक न्याय।

Introduction

भारतीय समाज और दर्शन की परंपरा में अनेक विचारकों ने अपनी दार्शनिक अवधारणाओं के माध्यम से सामाजिक पुनर्निर्माण की दिशा में योगदान दिया है। मानवेंद्र नाथ रॉय, दीनदयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी तीन ऐसे विचारक हैं जिन्होंने अपने–अपने दृष्टिकोण से समाज की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। मानवेंद्र नाथ रॉय ने नव–मानववाद के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किकता और स्वतंत्रता पर बल दिया, वहीं दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के सिद्धांत द्वारा भारतीय संस्कृति और सामाजिक संरचना के अनुरूप एक समावेशी विचारधारा विकसित की। दूसरी ओर, महात्मा गांधी ने अंत्योदय के माध्यम से समाज के सबसे कमजोर वर्ग के उत्थान की बात की, जिसमें आत्मनिर्भरता और विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था पर विशेष जोर दिया गया।

इन तीनों अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ये भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना को समझने और उसे सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। आज के वैश्वीकरण और तकनीकी उन्नति के दौर में इन विचारधाराओं की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। यह शोध पत्र इन तीनों विचारधाराओं का गहराई से अध्ययन कर उनके प्रभाव और आपसी संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा।

मानवेंद्र नाथ रॉय का नव–मानववाद– मानवेंद्र नाथ रॉय (1887–1954) भारतीय राजनीतिक विचारक, क्रांतिकारी और दार्शनिक थे। वे मूलतः मार्क्सवादी थे, लेकिन बाद में उन्होंने नव–मानववाद की अवधारणा प्रस्तुत की, जो व्यक्ति की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किकता पर आधारित थी।

नव–मानववाद की परिभाषा और उद्गम– नव–मानववाद (New Humanism) एक ऐसी विचारधारा है जो मानवीय मूल्यों, स्वतंत्रता और वैज्ञानिक सोच को प्राथमिकता देती है। यह विचारधारा न केवल पारंपरिक धार्मिक मतों का विरोध करती है, बल्कि व्यक्ति की बौद्धिक स्वतंत्रता और समाज के तार्किक पुनर्गठन पर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 03, March 2024

जोर देती है। रॉय ने इस विचार को मार्क्सवाद की जड़ता से अलग कर एक स्वतंत्र बौद्धिक आंदोलन के रूप में विकसित किया।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किकता पर बल– रॉय ने नव–मानववाद के अंतर्गत वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अत्यधिक महत्व दिया। वे मानते थे कि समाज की उन्नति केवल वैज्ञानिक पद्धतियों और तार्किक चिंतन के माध्यम से ही संभव है। उनका मानना था कि अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के स्थान पर विज्ञान और यथार्थवाद को अपनाना चाहिए।

व्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज के पुनर्निर्माण का दृष्टिकोण– रॉय के अनुसार, नव–मानववाद व्यक्ति की स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानता है। उनका विचार था कि समाज की संरचना इस प्रकार होनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने, अपने जीवन को नियंत्रित करने, और अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो।

नव–मानववाद और मार्क्सवादरू एक तुलनात्मक अध्ययन– रॉय ने मार्क्सवाद के मूल तत्वों को स्वीकार किया लेकिन उसकी कुछ अवधारणाओं की आलोचना भी की। उनके अनुसार, मार्क्सवाद समाज में वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देता है जबकि नव–मानववाद एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाने की वकालत करता है। रॉय मानते थे कि आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय को केवल एक कठोर वर्ग–संघर्ष के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे व्यक्ति की स्वतंत्रता और बौद्धिक विकास के माध्यम से सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

एकात्म मानववाद की अवधारणा– एकात्म मानववाद की अवधारणा भारतीय विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत की गई थी। यह दर्शन भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और समाज की मौलिक संरचना के अनुरूप एक समग्र और संतुलित विकास का प्रस्ताव करता है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक अविभाज्य इकाई के रूप में कार्य करें, जिससे समग्र विकास संभव हो।

भारतीय संस्कृति और समाज में एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता– एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्वों को ध्यान में रखते हुए विकास की एक नई दिशा प्रदान करता है। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के समन्वय की बात की जाती है, जिससे भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति में संतुलन बना रहे। भारतीय समाज में इसकी प्रासंगिकता इस कारण भी बढ़ जाती है क्योंकि यह पाश्चात्य पूंजीवाद और समाजवाद से अलग एक मध्यमार्ग प्रस्तुत करता है।

समाजवाद और पूंजीवाद से भिन्न दृष्टिकोण– एकात्म मानववाद न तो पूर्णतः पूंजीवाद का समर्थन करता है और न ही समाजवाद का। यह भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए एक संतुलित आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था का समर्थन करता है, जिसमें न तो बाजार की निरंकुशता हो और न ही राज्य का अत्यधिक नियंत्रण।

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच समन्वय– इस अवधारणा में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच समन्वय को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, जब व्यक्ति का विकास समाज के विकास के साथ सामंजस्य में होता है और समाज का विकास राष्ट्र के व्यापक हितों के अनुरूप होता है, तभी संपूर्ण विकास संभव हो पाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 03, March 2024

अंत्योदय, गांधीवादी दृष्टिकोण–

अंत्योदय का अर्थ और दर्शन– अंत्योदय का अर्थ है समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय। यह अवधारणा महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत की गई थी, जिसमें उन्होंने समाज के सबसे कमजोर और उपेक्षित वर्ग के उत्थान को प्राथमिकता देने की बात कही थी। उनका मानना था कि जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होंगी, तब तक वास्तविक प्रगति संभव नहीं होगी।

गांधीजी के ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का संबंध– गांधीजी के अनुसार, ग्राम स्वराज का अर्थ था आत्मनिर्भर और स्वशासित गाँव। उन्होंने विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया, जिसमें लघु उद्योगों, हस्तकला, और स्थानीय उत्पादन को प्राथमिकता दी गई। यह अवधारणा अंत्योदय के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी, क्योंकि इसका उद्देश्य समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना था।

सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय– अंत्योदय सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय की अवधारणा को आगे बढ़ाता है। गांधीजी मानते थे कि संसाधनों का समान वितरण आवश्यक है और धन का संकेंद्रण कुछ ही लोगों तक सीमित नहीं रहना चाहिए।

सर्वोदय और अंत्योदय में अंतर– जहाँ अंत्योदय समाज के सबसे कमजोर वर्ग के उत्थान पर केंद्रित है, वहीं सर्वोदय का लक्ष्य संपूर्ण समाज का उत्थान है। गांधीजी के विचार में, अंत्योदय सर्वोदय का ही एक अंग है।

तुलनात्मक अध्ययन– मानवेंद्र नाथ रॉय के नव–मानववाद, दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद और महात्मा गांधी के अंत्योदय की अवधारणाएँ भारतीय समाज के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। इन तीनों विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन करने से हमें उनके मूलभूत सिद्धांतों, उद्देश्य और प्रभावों को समझने में सहायता मिलती है।

मूलभूत सिद्धांतों की तुलना– नव–मानववादरू यह विचारधारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किकता और व्यक्ति की स्वतंत्रता पर आधारित है। मानवेंद्र नाथ रॉय ने इस दर्शन में समाज के पुनर्गठन और स्वतंत्र चिंतन को प्राथमिकता दी।

एकात्म मानववाद– दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद समाज को एक जीवंत इकाई मानते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप संपूर्ण विकास की बात करता है। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन पर बल दिया गया है।

अंत्योदयरू गांधीजी की यह अवधारणा समाज के सबसे गरीब और वंचित व्यक्ति के उत्थान को प्राथमिकता देती है। यह आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण और ग्राम स्वराज पर केंद्रित है।

समाज और व्यक्ति की भूमिका– नव–मानववादरू व्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वोपरि है, और समाज को एक वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से पुनर्गठित किया जाना चाहिए।

एकात्म मानववाद– व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक अविभाज्य इकाई के रूप में कार्य करते हैं, जहाँ सामूहिक हितों का ध्यान रखा जाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 03, March 2024

अंत्योदय– व्यक्ति की भूमिका समाज के सबसे कमजोर वर्ग की सेवा में निहित है, और इस सेवा के माध्यम से संपूर्ण समाज का उत्थान संभव है।

आर्थिक संरचना की तुलना–

नव–मानववाद, यह समाजवाद और पूंजीवाद दोनों की आलोचना करता है और एक तर्कसंगत तथा स्वतंत्र अर्थव्यवस्था की वकालत करता है।

एकात्म मानववाद, यह मिश्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन करता है, जिसमें न तो पूरी तरह से पूंजीवाद हो और न ही संपूर्ण समाजवाद।

अंत्योदय, यह विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था और लघु उद्योगों पर आधारित आर्थिक मॉडल को बढ़ावा देता है।

सामाजिक न्याय और समानता पर विचार–

नव–मानववाद– वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर जाति, धर्म और वर्गभेद से ऊपर उठने की बात करता है।

एकात्म मानववाद– सामाजिक समरसता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखते हुए समानता का पक्षधर है।

अंत्योदय– समाज के सबसे गरीब व्यक्ति को प्राथमिकता देते हुए समग्र उत्थान पर बल देता है।

नव–मानववाद, एकात्म मानववाद और अंत्योदय तीनों ही समाज के उत्थान की बात करते हैं, लेकिन उनके दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली में भिन्नताएँ हैं। नव–मानववाद व्यक्ति की स्वतंत्रता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता देता है, जबकि एकात्म मानववाद समग्र विकास और सामाजिक समरसता की बात करता है। अंत्योदय समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति के उत्थान को प्राथमिकता देकर एक मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इन तीनों विचारधाराओं का समावेश एक संतुलित और न्यायसंगत समाज के निर्माण में सहायक हो सकता है।

समकालीन समाज में इन विचारधाराओं की भूमिका– आज के वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के दौर में मानवेंद्र नाथ रॉय के नव–मानववाद, दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद और महात्मा गांधी के अंत्योदय की विचारधाराएँ अत्यंत प्रासंगिक बनी हुई हैं। आधुनिक समाज में इन विचारधाराओं का प्रभाव और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है।

लोकतांत्रिक मूल्यों और व्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रभाव–

नव–मानववाद व्यक्ति की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक सोच और तार्किकता को प्राथमिकता देता है। समकालीन समाज में शिक्षा, सूचना क्रांति और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा में इस विचारधारा का विशेष योगदान है।

एकात्म मानववाद, सामाजिक समरसता और सामूहिक हितों के बीच संतुलन बनाकर एक समन्वित लोकतांत्रिक व्यवस्था की दिशा में प्रेरित करता है।

अंत्योदय के अंतर्गत कमजोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा हेतु लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा को बल मिलता है।

आर्थिक संरचना और सतत विकास में योगदान–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 03, March 2024

नव–मानववाद वैश्विक अर्थव्यवस्था में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवीन प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देता है।

एकात्म मानववाद संतुलित आर्थिक नीति अपनाने पर बल देता है, जिसमें न तो पूर्ण पूंजीवाद हो और न ही संपूर्ण समाजवाद, बल्कि आत्मनिर्भरता और समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त किया जाए।

अंत्योदय के आधार पर विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, कुटीर उद्योगों और ग्रामीण विकास योजनाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है, जिससे गरीबी उन्मूलन और सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके।

सामाजिक समानता और समावेशी विकास–

नव–मानववाद जाति, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने की वकालत करता है।

एकात्म मानववाद समाज में समरसता स्थापित करने के लिए सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और सामूहिक उत्तरदायित्व की बात करता है।

अंत्योदय वंचित वर्गों के सशक्तिकरण पर बल देता है, जिससे समाज के अंतिम व्यक्ति को विकास की मुख्यधारा में शामिल किया जा सके।

पर्यावरणीय संतुलन और नैतिकता–

नव–मानववाद वैज्ञानिक नवाचारों के माध्यम से पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान की बात करता है।

एकात्म मानववाद प्रकृति और मानव के बीच संतुलन बनाए रखने पर जोर देता है।

अंत्योदय प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग और स्वदेशी उत्पादों को अपनाने की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

वैश्वीकरण और भारतीय संदर्भ–

नव–मानववाद वैश्विक परिप्रेक्ष्य में तर्कसंगत विचारधारा अपनाने की बात करता है।

एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति को आत्मसात करते हुए वैश्विक विकास का मार्ग सुझाता है।

अंत्योदय, समावेशी विकास को प्राथमिकता देते हुए वैश्विक असमानता को समाप्त करने की दिशा में योगदान देता है।

समकालीन समाज में इन तीनों विचारधाराओं की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है। नव–मानववाद तार्किकता और विज्ञान के माध्यम से प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है, एकात्म मानववाद समावेशी और संतुलित विकास की बात करता है, जबकि अंत्योदय समाज के सबसे वंचित वर्ग के उत्थान पर केंद्रित है। यदि इन तीनों विचारधाराओं का समुचित समन्वय किया जाए, तो एक न्यायसंगत, प्रगतिशील और आत्मनिर्भर समाज की स्थापना की जा सकती है। इस शोध पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि मानवेंद्र नाथ रॉय का नव–मानववाद, दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और गांधीजी का अंत्योदय, तीनों ही भारतीय समाज के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। इनके सिद्धांत आधुनिक भारत में सामाजिक और आर्थिक सुधारों के लिए आवश्यक दिशा प्रदान करते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 03, March 2024

सन्दर्भ सूची–

- रॉय, मानवेंद्र नाथ. Reason] Romanticism and Revolution- Renaissance Publishers,1952।
- उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. भारतीय जनता पार्टी प्रकाशन, 1965।
- गांधी, महात्मा. हिंद स्वराज. नवजीवन प्रकाशन, 1909।
- शर्मा, रामनारायण. भारतीय राजनीतिक चिंतन. वाणी प्रकाशन, 2008।
- मेहता, प्रकाश. भारतीय समाज और आर्थिक विचारधाराएँ. ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2012।
- सेन, अमर्त्य. The Idea of Justice- हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009।
- मिश्रा, कमलेश. समकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक विचारधारा. राजकमल प्रकाशन, 2016।
- चक्रवर्ती, अशोक. Modern Indian Political Thought. सेज पब्लिकेशंस, 2020।
- रॉय, मानवेंद्र नाथ. 'नव–मानववाद का सिद्धांत'।
- उपाध्याय, दीनदयाल. 'एकात्म मानववाद की भूमिका'।
- गांधी, महात्मा. 'हिंद स्वराज और अंत्योदय'।
- शर्मा, रामप्रसाद. 'भारतीय दार्शनिक परंपरा और समाज सुधार'।
- सिंह, अरविंद. 'भारतीय राजनीतिक चिंतन में नव–मानववाद और अंत्योदय'।